आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025
Received: 19/08/2025; Accepted: 22/08/2025; Published: 28/08/2025

पुस्तक समीक्षा

एक उम्मीद है दिये की तरह

- डॉ शुभा श्रीवास्तव

डॉ शुभा श्रीवास्तव, एक उम्मीद है दिये की तरह, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(205-211) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072846

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

मंजुला चतुर्वेदी का यह संग्रह अपने विविधरंगी वर्णन के कारण ध्यान आकर्षित करता है। इस संग्रह को पढ़कर कोई भी यह कह सकता है कि यह रचना किसी चित्रकार की है क्योंकि पूरी पुस्तक में रंग बिखरे पड़े हैं। रचनाकार की दृष्टि से इस कविता संग्रह को देख तो स्वयं मंजुला कहती है कि "कविता अनुभूति की उस गहनतम इकाई की प्रस्तुति है जो मानस पर अंकित हो उसे आंदोलित करती है। जीवन के विषाद भरे क्षणों में जब कविमन जीवन का विश्लेषण करता है तो उसके हाथ जो भी अक्षर आते हैं शब्द बनकर अनेक अंतर्ध्वनियों सहित समय और जीवन का मर्म और सार प्रस्तुत करते हैं। यह कवि मन का एक पक्ष होता है। लेकिन इस पक्ष या चिंतन के प्रसाद की व्याप्ति सामाजिक और सार्वकालिक होती है जो एक जीवन को जिलाती है, श्वांसें भरती है और चौकड़ी भरने लायक बनाती है। यूँ जीवन के सिलसिले को गंभीर और लयात्मक बनाए रखने का कार्य सांकेतिक रूप से कविता करती है।"

कविता का जन्म मंजुला के अनुसार पीड़ादायक है। कविता को प्रसव की पीड़ा कहना एक स्त्री के ही समर्थ की बात है। जन्म नामक कविता में वह लिखती है कि

कविता के जन्म की पीड़ा
किसी प्रसव से काम नहीं
जीना पड़ता है दर्द
तैरना होता है
कड़वे पानी की झील में
विपरीत हवाओं में
बीते हुए दिन
और नव सूर्य को लिए
हर दिन हर पल
स्थान और कल के सापेक्ष

यह काव्य संग्रह लहरों में विन्यस्त, मन के रूपाकार, कोरोना समय नामक तीन खण्ड में विभक्त है । लहरों में विन्यास की कविताएं सचमुच प्रकृति की लहरों में सजाकर रखी हुई कविताएं हैं। पुनर्नवा, प्रेम समय, गुलाब, आशु नाम जैसी कविताएं अपने स्थापना को स्वयं प्रदर्शित करती हैं। मंजुला जी कहती हैं

धरती सुहागन होने को
मचल जाएगी ऋतुराग में
बसंत उमगेगा शिराओं में
और प्रकृति भी विहंसने लगेगी
फूल फलों के साथ कायनात में

इस जैसी अनेक कविताएं प्रकृति की लहरों में अपने आप को विन्यास्त करती हुई यह सिद्ध करती हैं कि रचनाकार प्रकृति से बेजोड़ रूप से जुड़ा हुआ है। प्रकृति का यह जुड़ाव मानवीय संवेदना का जुड़ाव है तभी तो वह कहती है कि

मैं प्रेम की लहरों में विन्यस्थ
बुन रही हूं कोई सुरमई ख्वाब

मंजुला जी की कविताओं में प्रेम और प्रकृति संश्लिष्ट रूप में है। यहां पर धरती अपने पहाड़, नदियों और जंगलों को ढूंढती है। वह आकाश, चांद और तारे, प्रकृति की उजली रातें तलाशती है। वह बेचैन होकर भाव में विचरते हैं कि

चाँद की चाँदनी में ही नहाते हैं
प्रेमी युगल
चहचहाते हैं पंछी
तन और मन का संगीत
समाता है समूची सृष्टि में
लय बन गिटार की।

मंजुला जी की कविताएं प्रकृति तक ही सीमित नहीं है। वह प्रकृति के माध्यम से अग्रगामी विचार और अपनी दृढ़ता को भी प्रदर्शित करती हैं। उनकी कविताओं में आशावादी दृष्टिकोण सर्वत्र नजर आता है जो उनकी वैचारिकता का पर्याय बनकर पाठक के समक्ष उपस्थित होता है

देखती रही तलछट के रंग
कंकड़, पत्थर, शैवाल
और डूबती-उतराती मछलियाँ
उनकी गति और ख़याल
तैरना मेरा संकल्प है
प्रारब्ध नहीं
जल की अंतर धाराओं संग
फूटती रहती हैं मुझमें भी
अनगिन धाराएँ अनवरत ।

वर्तमान सच पर मंजुला जी की दृष्टि सदैव बनी रहती है। आज हमारे समाज का सबसे बड़ा प्रश्न पर्यावरण संरक्षण है जो हर कवि की चिंता होती है। यह चिंता मंजुला जी की कविताओं में भी दिखाई देती है। वह पर्यावरण, स्त्री, चिड़िया सबको गुम्फित रूप में व्यक्त करती है। मंजुला जी को अपनी मां की दी हुई चेतावनी बार-बार याद आती है कि आंगन में नाखून को काटकर उसके टुकड़े नहीं फेंकने चाहिए नहीं तो चिड़िया का गर्भ गिर जाता है। इस छोटी और संवेदनशील बात को मंजुला जी कविता के माध्यम से कहती हैं

गाँठ बाँधे मन में
न बिखेरे नाखून कभी
इधर-उधर, चिड़िया थी

घर-आँगन की, जैसे हम
कि चिंता थी लोक में
पर्यावरण औ जीवन विस्तार की
सह अस्तित्व संग
सपने संभाले चिड़िया के
पालती रही स्त्री
अपने सपने भी
मन औ कोख में

जीवन को समझने का मर्म कभी समाप्त नहीं होता है। यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है जिससे लेखिका भी जूझती है -

मैने देखा चाहत का
अद्भुत संसार
धड़कते हुए उसके
जीवन के पास
हम न जाने कितनी
और कितनी बार
जीवन के कितने
दरवाजे खोलते हैं और
बंद करते हैं खुद को
जानने की प्रक्रिया में,
मन को सहेजने के क्रम में
भ्रम विभ्रम में।

मन के रूपकर अनुभाग की कविताओं में कलाकार राजकुमार के चित्र, सब वाला के चित्रों को देखते हुए स्वप्न, लाल रंग और मैं विवृत्ति रंगो आब जैसी कविताएं कलावंत के अधूरे चित्रों को पूरा करती हैं। वहीँ कोरोना समय की कविताएं कोरोना कल की विभीषिका को प्रस्तुत करती हैं कोरोना काल की कुल सात कविताएं कोरोना की त्रासदी को कविताओं के माध्यम से व्यक्त करती हैं।

सूख गये रंग सारे
शेष बह गये आँखों से
कोरोना ने नहीं छोड़े

काले सफ़ेद भी आसपास
रंगविहीन दुनियाँ
घिसट-घिसट
सिसक-सिसक
चलती रही सड़कों पर
फोड़ती रही सिर
बंद दरवाज़ों से

संग्रह की कविताओं में आशा है तो निराश भी है, स्वप्न है तो यथार्थ भी हैं। कहीं माता की मीठी चेतावनी है तो कहीं पिता की स्मृति अंकित है। यह सारी कविताएं मनुष्य के संवेदनशील मन की उत्पत्ति हैं। यह संवेदना एक चित्रकार कैसे शब्द चित्रों के माध्यम से चित्र बनाता है इसकी शानदार प्रस्तुति है। चिड़िया तथा प्रकृति के अन्य उपादान जैसे नदी, पहाड़, चांदनी इत्यादि इन कविताओं में सर्वत्र बिखरे हुए हैं। इन बिंबो के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के अंतर संबंधों का एक कोलाज बना जाता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है -

उस पार नीला आकाश से देखना तुम पहाड़ चोटिया और नदियां
सुनना आहटें
बादलों के बीच
पढ़ना सन्नाटे में जंगलों के मन
उनकी पीड़ा और धरती की तपन
संभव हो तो बजा देना प्रेम बांसुरी
पलाश मुख से

कविता की यह पंक्तियां किसी भी पाठक को सहज ही आकर्षित करती हैं। इन पंक्तियों को पढ़कर लगता है कि जैसे यह स्वयं के द्वारा ही लिखी गई है पर कलम मंजुला जी की चल गई है। इन कविताओं में संवेदना की गहन अनुभूति है। इन्हीं अनुभूतियों का नाम एक उम्मीद है दिये की तरह काव्य संग्रह। पूरा संग्रह अपने आप में अनूठा और अद्वितीय है।

मंजुला जी की कविताओं में आधुनिकता अपनी तमाम व्याधियों के साथ, जीवन अपने तमाम झंझावत के साथ, निराशा अपनी चुभन के साथ और आशा अपने उल्लास के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। इन कविताओं में नदी है, नीला आकाश है, पहाड़ों की धुंध है, आंगन की चिड़िया है और उसे चिड़िया के माध्यम से जीवन का संगीत है। यह अद्‌भुत बात है कि इस संग्रह में संगीत और चित्रकला का सहयोग एक साथ दिखाई देता है। साहित्य कला और संगीत की यह त्रिवेणी कविता संग्रह की निजी विशेषता है।

पुनर्नवा कविता में प्रेम और प्रकृति संश्लेषित रूप में है। प्रेम जीवन का अभिन्न राग है। प्रेम मंजुला जी के लिए सहारा भी है जिससे वह उल्लासित होती हैं और अपने घनीभूत क्षणों में प्रेम के माध्यम से जीवन सत्य का साक्षात्कार करती हैं। शब्दों के माध्यम से वह प्रेम को देंह और मन से परे उसे लोक की रचना मानती हैं जिसे वासना जनित देंह और मन से नहीं समझा जा सकता है। प्रेम इन कविताओं में महाभाव के रूप में उपस्थित हुआ है। प्रेम में सांसारिक ही नहीं आध्यात्मिक यात्रा को भी जोड़कर मंजुला की प्रेम के नए भाव का चित्रण करती हैं। प्रेम मंजुला जी के शब्दों में क्या है यह कविता से कुछ पंक्तियां उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत कर रही हूं -

हवाओं के पन्नों पर
लिख रही है अब प्रेम लहरी
जिससे बनी रहे हरियाली
और उठती रहे हिलोर
स्पंदन की, सदियों तक
हमारे न रहने पर भी
आख़िर प्रेम ही पूजा है
जीवन का महाभाव।

प्रेम उन्हें सहारा ही नहीं देता है बल्कि भीतर की खुशी आनंद का भी कारण प्रेम ही है और इस आनंद में वह आत्म चिंतन करती हैं। यह आत्म चिंतन सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों हैं। प्रेम जितना विस्तृत है उतना ही मंजुला जी की कविताएं प्रेम के संदर्भ में विस्तृत हैं। यह प्रेम के विभिन्न रूपों विभिन्न संवेदनाओं विभिन्न परतों का बखान है कहीं इस प्रेम में उल्लास है तो कहीं उदासी है, कहीं मन की मौज है तो कहीं बेबसी। प्रेम यहां काल्पनिक नहीं भोगे हुए यथार्थ के रूप में उपस्थित हुआ है।

जहां कहीं प्रेम में एकांत का चित्रण है वह एकांत स्वयं को भीतर से देखने और स्वयं को मूल्यांकित करने के संदर्भ में है इसलिए प्रेम यहां पर शक्ति के रूप में है ना की नकारात्मक रूप में है।

प्रस्तुत कविता संग्रह में गर्भवती नाम की कविता की श्रृंखला है जो सृजन का नया आस्वाद प्रस्तुत करती हैं। इन कविताओं में परंपरा है संस्कार है आज के समाज का यथार्थ है।

स्त्री दृष्टिकोण से मंजुला जी की सारी कविताएं उल्लेखनीय हैं। आंगन की चिड़िया, माला के तीन मनके, गर्भवती जैसी कविताएं स्त्री पक्ष का संपूर्ण बयान कविता में उपस्थित करती हैं। स्त्री के विभिन्न रूप मंजुला जी की कविताओं में उपस्थित हुए हैं। कहीं वह मन है कहीं वह पुत्री और कहीं पिता की पुत्री हैं। स्त्री के लिए वह कहती हैं

अगले जन्म का सपना लिए
विदा होती है एक स्त्री

सुंदर सृष्टि सृजन के लिए
फिर फिर मां बनने के लिए

संपूर्ण सृष्टि का विस्तार स्त्री के ही माध्यम से संभव है जीवन का यह असर मंजुला जी की कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्त्री प्रकृति के सानिध्य में एक खिलता हुआ जीवन जीती है जो उत्सव मनाती है। जीवन के विभिन्न ऋण उसकी निरंतरता उसके भाव इन सब का चित्रण प्रेम और प्रकृति के अनुभूति के साथ कवयित्री की कलम से उतरा है। उनका जीवन अनवरत धड़कनों के साथ स्पंदित होता है और उसमें मिलने की उत्कंठा है। वह जानती है कि एक समय ऐसा आएगा कि वक्त बदल जाएगा।

मन के रूपकर खंड में हम चित्रकार मंजुला का दर्शन करते हैं इसमें रामकुमार, जहांगीर, सबवाला जैसे आधुनिक चित्रकारों की कृतियों को मंजुला की परखती हैं। वह इन चित्रों में अनुभूतियां, उनके मुर्त अमूर्त छवियों को देखती हैं। यह छबियां कैसे रूप को बांधती हैं और कैसे जीवन के विभिन्न संदर्भों को प्रस्तुत करती हैं यह इन कविताओं को देखकर के एहसास होता है।

इन कविताओं में चित्र हैं परंतु इन चित्रों में रंगों के माध्यम से संवाद है जो पाठक को आंदोलित करता है, विचलित करता है और आश्वस्त भी करता है। आधुनिक काल में आंदोलन के जितने भी रंग हो सकते हैं जो जीवन से हमारा परिचय करते हैं वह सब इन कविताओं में अनायास उपस्थित हो गए हैं।
संग्रह में कई कविताएं मंजुला जी की लद्दाख यात्रा से भी संबंधित है जो अपने प्रकृति परिवेश के कारण पाठक के मन में गहरा प्रभाव डालते हैं।
जीवन प्रेम और उसके राग की यह कविताएं पाठक के लिए नई संवेदना प्रस्तुत करती हैं। संग्रह के सन्दर्भ में ओम निश्चल के शब्दों में कहे तो -"आज का माहौल हर क्षेत्र में आधुनिकता के चाकचिक्य और उसकी व्याधियों से भरा है। जीवन की सतत् जद्दोजहद और उदासियों में ऊभ-चूभ करते स्त्री जीवन के तमाम अलक्षित कोने पुनः उनकी कविताओं के माध्यम से यहाँ रोशन हैं। यहाँ नेह-छोह के आवर्तन हैं तो उदासी की नदी में चल रहा मंथर विचार प्रवाह भी, नीलाकाश के रंगों का विन्यास है तो पहाड़ों पर धुंध को चीरती हुई आंगन की चिड़िया भी जिसके कोलाहल कलरव से जीवन का संगीत बनता है। कला की विवृत्ति इस मनोमय और कलामय दुनिया का एक अटूट हिस्सा है। कवयित्री की कलात्मक अंतर्दृष्टि से न गर्भवती स्त्री छूटती है, न रामकुमार और साबावाला के चित्र, न कोरोना समय की विभीषिका ही, जमुन जल में छप-छप करती संवेदना उसे कभी स्मृति के मनोरम एकांत में ले जाती है, कभी यथार्थ के अनुभव कविता के नैरेटिव को एक अलग ही मंजुल आभा प्रदान करते हैं।"
भाषा की जहां तक चर्चा की जाए मंजुला जी ब्रज की भाव संपदा से समृद्ध हैं। उनकी कविताओं में पहाड़ उससे संबंधित शब्द लय और ताल अनुभव के साथ कविताओं में उपस्थित हुए हैं। भाषा जितनी सीधी सरल भावपूर्ण है उतनी ही व्यवहारिक भी है। पाठक कहीं से इन भाषाओं से टकराते हुए अपने को व्यथित नहीं पाता है बल्कि अपनी संवेदनाओं की लय से भाषा का सामंजस्य पाता है। सादगी और नई अर्थवत्ता संवेदना में समाहित होकर

भाषा के माध्यम से इन कविताओं में रंगत बिखेरती हैं।संग्रह की सार्थकता इसी बात में है कि पाठक संग्रह को पढ़कर के अपने को समृद्ध महसूस करता है।

****